IGNOU IQ HINDI

SOLVED ASSIGNMENT

2025-26

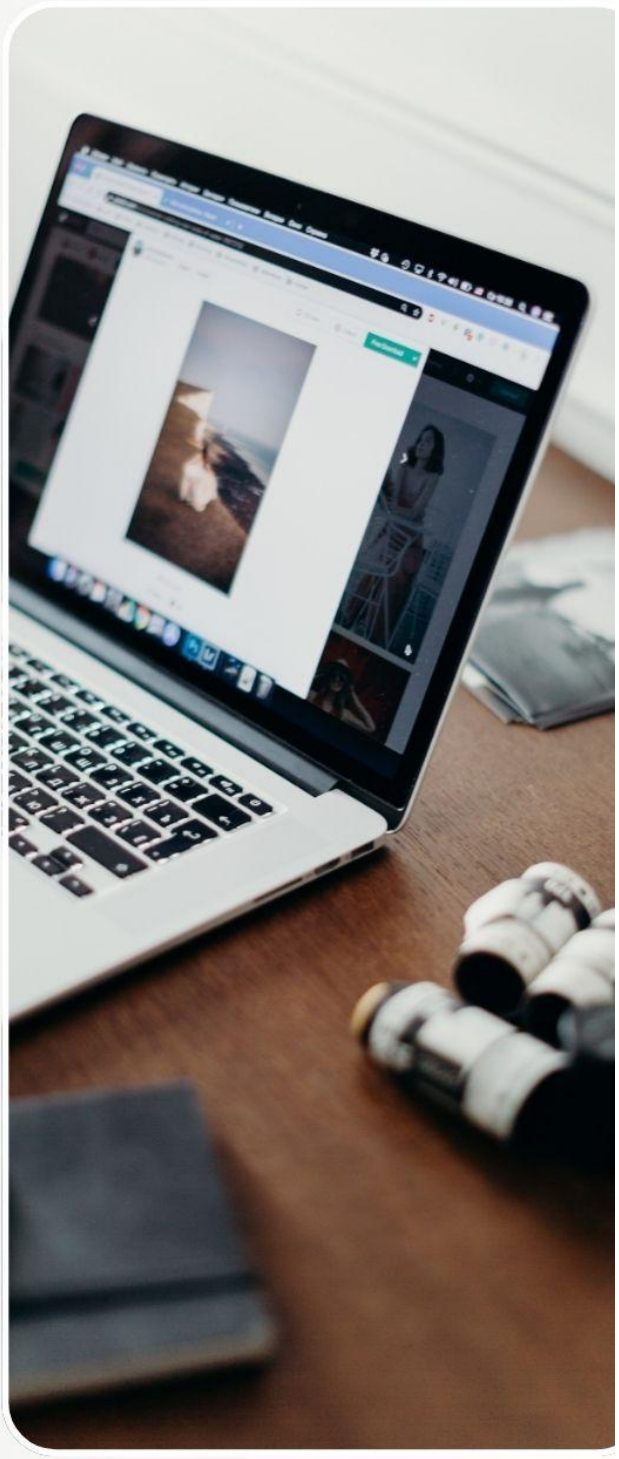

Your journey to success begins here join our comprehensive online course.

CONTACT US

6205717642/8521027286

ignouiqinfo@gmail.com

This PDF of 'IGNOU IQ Hindi' is not for selling or sharing, otherwise legal action can be taken against you.

ASSIGNMENT

BPSE – 143

Disclaimer for this Guess Paper/Notes/Sample Papers By IGNOU IQ HINDI (IIH)

This PDF contains previous year questions asked by IGNOU. This PDF has been created to help you in the exam. However, It is important to note the following :

A. No Guarantee of Examination Questions: We do not guarantee that the questions presented in this sample paper will appear in your actual exams. The content is for practice purposes only.

B. Book Study Recommended: To achieve good marks in your IGNOU exams, it is highly recommended that you thoroughly study the prescribed course materials and textbooks. Relying solely on this sample paper may not be sufficient for exam success.

C. Use as a Study Materials : Use this sample paper as a supplementary study aid to test your knowledge and exam preparedness.

D. Self-Responsibility: Your performance in exams is your responsibility, and success depends on your dedication to studying the course material.

PDF By Suraj Kumar Sir (8521027286/6205717642) …….visit our website www.ignouiqhindi.com

हमारे यहाँ Handwritten Assignments/Synopsis/Project बनाया जाता है - 62057107642/8521027286

BPSE-143 : भारत में राज्य की राजनीति अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड: BPSE-143

सत्रीय कार्य कोड: BPSE-143/ASST/TMA/2025-26

अधिकतम अंकः 100

BPSE- 143 : भारत में राज्य की राजनीति
अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड: **BPSE-143**
सत्रीय कार्य कोड: **BPSE-143/ASST/TMA/2025-26**
अधिकतम अंक: **100**

यह सत्रीय कार्य तीन भागों में विभाजित हैं। आपको तीनों भागों के सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

सत्रीय कार्य-I

निम्न वर्णनात्मक श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का है।

1) भारत में राज्य स्तर पर गठबंधन राजनीति के विकास का विश्लेषण कीजिए।

2) राज्य राजनीति के स्वरूप को आकार देने में क्षेत्रीय पहचान और भाषा की भूमिका की विवेचना कीजिए।

सत्रीय कार्य-II

निम्न मध्यम श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का है।

3) भारत के संदर्भ में सहकारी संघवाद के महत्व को स्पष्ट कीजिए।

4) भारतीय राज्यों की चुनावी राजनीति में जाति की भूमिका समझाइए।

5) राज्यों में राष्ट्रपति शासन लागू होने के प्रमुख परिणामों को समझाइए।

सत्रीय कार्य-III

निम्न लघु श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंकों का है।

6) विकास राजनीति को उदाहरण सहित परिभाषित कीजिए।

7) दल प्रणाली के रूपांतरण से आप क्या समझते हैं?

8) सरकारिया आयोग की दो प्रमुख सिफारिशें बताइए।

9) विषम संघवाद की अवधारणा को उदाहरण सहित समझाइए।

10) भारतीय राजनीति के संदर्भ में LGBTQ+ समुदाय कौन हैं?

सत्रीय कार्य-1

निम्न वर्णनात्मक श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का है।

1) भारत में राज्य स्तर पर गठबंधन राजनीति के विकास का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर : भारत में राज्य स्तरीय गठबंधन राजनीति का विकास एक-दलीय प्रभुत्व (कांग्रेस प्रणाली) के ह्रास, क्षेत्रीय आकांक्षाओं के उदय और पहचान की राजनीति के कारण हुआ, विशेषकर 1967 (चौथे आम चुनाव) के बाद। यह विचारधारा से अधिक सत्ता-साझाकरण, अवसरवाद और क्षेत्रीय मुद्दों को राष्ट्रीय राजनीति में लाने का माध्यम बन गई है।

राज्य स्तर पर गठबंधन राजनीति के विकास का विश्लेषण:

- **ऐतिहासिक शुरुआत (1967 के बाद):** 1967 में हिंदी बेल्ट के कई राज्यों में कांग्रेस की हार के साथ 'समविद' (संयुक्त विधायक दल) सरकारों का दौर शुरू हुआ, जिसने राज्य स्तर पर गठबंधनों की नींव रखी।
- **क्षेत्रीय दलों का उदय:** 1980 और 90 के दशक में भाषाई, जातीय और क्षेत्रीय पहचान के आधार पर (जैसे- तमिलनाडु में द्रमुक, बिहार में जदयू/राजद, यूपी में सपा/बसपा) क्षेत्रीय दलों का दबदबा बढ़ा, जिसने राष्ट्रीय दलों को गठबंधन के लिए मजबूर किया।
- **गठबंधन के प्रकार:**
  - **विचारधारा-आधारित:** समान विचारधारा वाली पार्टियों के बीच (जैसे- वामपंथी मोर्चे)।
  - **अवसरवादी गठबंधन:** चुनाव के बाद सत्ता पाने के लिए विपरीत विचारधारा वाली पार्टियों का साथ आना।
- **सकारात्मक पहलू (लोकतांत्रिक सुदृढ़ीकरण):** गठबंधन सरकारों ने शासन में भागीदारी बढ़ाई, विविधता को प्रतिनिधित्व दिया और केंद्र-राज्य संबंधों में क्षेत्रीय आवाज को बुलंद किया।
- **नकारात्मक पहलू (अस्थिरता):** गठबंधन के दौर में दलबदल, खरीद-फरोख्त और नीतियों में अनिश्चितता जैसी समस्याएं आम रहीं, जिससे दीर्घकालिक विकास प्रभावित हुआ।
- **वर्तमान परिदृश्य:** 2014 के बाद भाजपा के मजबूत होने के बावजूद, राज्यों में गठबंधन अभी भी बहुत महत्वपूर्ण हैं। अब ये गठबंधन 'राष्ट्रीय दल + क्षेत्रीय दल' या केवल 'क्षेत्रीय दलों का समूह' के रूप में काम कर रहे हैं।

निष्कर्षतः, भारत में राज्य स्तर पर गठबंधन राजनीति ने क्षेत्रीय आकांक्षाओं को राष्ट्रीय पटल पर लाकर लोकतंत्र को व्यापक बनाया है, लेकिन इसने राजनीतिक अस्थिरता की चुनौतियां भी पैदा की हैं।

- संघवाद एक प्रकार की राजनीतिक व्यवस्था है जिसमें केंद्र सरकार और क्षेत्रों के बीच सत्ता का बंटवारा होता है। संघवाद शब्द लैटिन भाषा से आया है और इसका अर्थ है राजनीतिक शक्तियों का गठबंधन। संघवाद एक ऐसी राजनीतिक व्यवस्था है जिसमें सरकार के दो स्तर अलग-अलग स्रोतों से सत्ता प्राप्त करते हैं। भारत में गठबंधन सरकारों का गठन कोई नई बात नहीं है।
- उच्च स्तरीय सरकार केंद्रीय राज्य है, और निम्न स्तरीय सरकार को राज्य कहा जा सकता है। नीतियों को लागू करते समय केंद्र को राज्य सरकारों के साथ तालमेल बिठाना और बातचीत करना आवश्यक है।

- गठबंधन सरकारें अस्थायी सरकारें होती हैं जो कई राजनीतिक दलों के एक साथ काम करने पर सत्ता में आती हैं। इनका गठन लोकतांत्रिक, बहुदलीय प्रणालियों की जटिलताओं से निपटने के लिए किया जाता है। गठबंधन में दो या दो से अधिक दल शामिल होते हैं जिनके पास विधायिका में बहुमत होता है।
- भारतीय संघवाद का स्वरूप: भारत सरकार अधिनियम, 1935 ने भारतीय संघीय प्रणाली के विकास को बहुत प्रभावित किया। ग्रैनविल ऑस्टिन के अनुसार, भारत के संविधान ने प्रारंभ से ही "सहकारी संघवाद" को अपनाया। भारत की संघीय संरचना का अर्थ है कि यह सहयोग पर निर्भर है।
- 1967 से भारत की पार्टी प्रणाली में उथल-पुथल मची हुई है, जब गठबंधन सरकारें बननी शुरू हुईं। सरकार बदलने के साथ ही नई पार्टियां अस्तित्व में आईं और पुरानी पार्टियां भंग हो गईं। क्षेत्रीयता के आगमन के साथ ही भारत में गठबंधन राजनीति प्रणाली विकसित हुई। केंद्र में बनी गठबंधन सरकार शासन प्रणाली में एक महत्वपूर्ण बदलाव का संकेत देती है - यह बदलाव केंद्रीकृत और साझा दोनों तरह का है।
- क्षेत्रीय दलों का भारतीय सरकार पर प्रभाव बढ़ता जा रहा है। इससे क्षेत्रीय-राष्ट्रीय संबंधों में बदलाव आया है। गठबंधन सरकारें लंबे समय से सभी लोकतंत्रों में एक मानक रही हैं। गठबंधन सरकारें तब बनती हैं जब विभिन्न दल मिलकर सरकार का गठन करते हैं।
- एकल-दलीय सरकारों के विपरीत, गठबंधन सरकारों को अपने कानूनों और नीतियों को लागू करने के लिए मिलकर काम करना और सक्रिय भागीदारी निभाना आवश्यक होता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि उनके पास अकेले दम पर आवश्यक कानून पारित करने के लिए पर्याप्त सीटें नहीं होती हैं। उन्हें अधिक समावेशी होना और उन राजनीतिक दलों से संपर्क करना भी आवश्यक है जो कानून पारित कराने में उनकी मदद कर सकें।

2)राज्य राजनीति के स्वरूप को आकार देने में क्षेत्रीय पहचान और भाषा की भूमिका की विवेचना कीजिए।

उत्तर : भारतीय राज्य राजनीति के स्वरूप को आकार देने में क्षेत्रीय पहचान और भाषा निर्णायक भूमिका निभाते हैं, जो केंद्र-राज्य संबंधों, चुनावी गठबंधनों और स्थानीय आकांक्षाओं को प्रभावित करते हैं। यह पहचान और भाषा ही क्षेत्रीय दलों के उदय का मुख्य आधार हैं, जो स्थानीय संस्कृति और मुद्दों के माध्यम से वोट मांगते हैं और केंद्र की राष्ट्रीय राजनीति में अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हैं, जैसे महाराष्ट्र में शिवसेना, तमिलनाडु में द्रविड़ दल और पंजाब में अकाली दल।

राज्य राजनीति में भूमिका:

- **क्षेत्रीय दलों का उदय:** क्षेत्रीय पहचान और भाषाई अस्मिता ने भारतीय राजनीति में बहुदलीय प्रणाली को बढ़ावा दिया है। 1970 के दशक के बाद से क्षेत्रीय दलों का प्रभाव बढ़ा है। ये दल क्षेत्रीय संस्कृति के रक्षक के रूप में अपनी छवि बनाते हैं, जैसे हिंदी विरोधी आंदोलनों ने दक्षिण भारत में भाषाई पहचान को मजबूत किया।
- **भाषाई पुनर्गठन और राजनीति:** स्वतंत्रता के बाद भाषाई आधार पर राज्यों का पुनर्गठन हुआ, जिससे भाषा ही राजनीति का केंद्र बन गई। यह स्थानीय शासन, शिक्षा और प्रशासन में अपनी भाषा को प्राथमिकता देने की मांग के रूप में सामने आता है।
- **गठबंधन सरकारें:** क्षेत्रीय दलों ने केंद्र में गठबंधन सरकारों के गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिससे राज्य-विशिष्ट मुद्दों को राष्ट्रीय स्तर पर उठाया जा सका।

- **क्षेत्रवाद का प्रभाव:** क्षेत्रवाद के कारण ही राज्यों में उप-राष्ट्रवाद और क्षेत्रीय पहचान का विकास हुआ है, जैसे पूर्वोत्तर भारत में अपनी पहचान को लेकर राजनीतिक संघर्ष।

भाषा की भूमिका:

- **राजनीतिक लामबंदी:** राजनेता वोट हासिल करने के लिए भाषाई प्रतीकों का उपयोग करते हैं।
- **क्षेत्रीय एकजुटता:** भाषा एक क्षेत्र के लोगों को जोड़ती है, जो क्षेत्रीय दल की पहचान का प्रमुख कारक बनती है।

1. राज्यों का भाषायी पुनर्गठन

1956 के राज्य पुनर्गठन अधिनियम ने भाषा को राज्य गठन का आधार बनाया। इससे **क्षेत्रीय और भाषायी पहचान** को राजनीतिक मान्यता मिली और राज्य राजनीति को स्पष्ट रूप से दिशा मिली।
उदाहरण: तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र।

2. क्षेत्रीय अस्मिता का राजनीतिकरण

क्षेत्रीय पहचान ने स्थानीय मुद्दों, संस्कृति और इतिहास को राजनीति के केंद्र में लाया। राजनीतिक दल क्षेत्रीय अस्मिता को उभारकर **जनसमर्थन** प्राप्त करते हैं।
उदाहरण: द्रविड़ आंदोलन (तमिलनाडु), असमिया पहचान आंदोलन।

3. क्षेत्रीय दलों का उदय

भाषा और क्षेत्र आधारित पहचान के कारण अनेक **क्षेत्रीय दल** उभरे, जिन्होंने राज्य राजनीति को राष्ट्रीय दलों से अलग स्वरूप दिया।
उदाहरण: DMK, AIADMK, शिवसेना, TDP।

4. नीति निर्माण और प्रशासन पर प्रभाव

राज्य सरकारें अपनी भाषा और सांस्कृतिक पहचान के अनुरूप शिक्षा, प्रशासन और सांस्कृतिक नीतियाँ बनाती हैं।
उदाहरण: क्षेत्रीय भाषाओं को आधिकारिक भाषा बनाना, स्थानीय पाठ्यक्रमों का विकास।

5. केंद्र–राज्य संबंधों में भूमिका

भाषा और क्षेत्रीय पहचान के आधार पर राज्यों ने केंद्र से **अधिक स्वायत्तता और अधिकारों** की मांग की है, जिससे सहकारी एवं कभी-कभी प्रतिस्पर्धी संघवाद को बढ़ावा मिला।

6. सामाजिक समावेशन और लोकतंत्रीकरण

क्षेत्रीय और भाषायी राजनीति ने हाशिए पर पड़े समूहों को **राजनीतिक मंच और प्रतिनिधित्व** दिया, जिससे लोकतंत्र अधिक समावेशी बना।

7. नकारात्मक प्रभाव

अत्यधिक क्षेत्रीयता और भाषायी संकीर्णता से

- बाहरी लोगों के प्रति विरोध
- राष्ट्रीय एकता पर दबाव
- पहचान आधारित ध्रुवीकरण
  जैसी समस्याएँ भी उत्पन्न हुई हैं।

निष्कर्ष:
क्षेत्रीय पहचान और भाषा राज्य राजनीति में न केवल सशक्त राजनीतिक दलों को जन्म देते हैं, बल्कि संघीय ढांचे को मजबूत करने के साथ-साथ केंद्र के सामने स्थानीय विकास के मुद्दे भी रखते हैं। यह अंततः भारतीय लोकतंत्र को अधिक विविधतापूर्ण और सहभागी बनाता है, हालांकि कभी-कभी यह राष्ट्रीय अखंडता के साथ टकराव का कारण भी बन सकता है।

सत्रीय कार्य-11

निम्न मध्यम श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का है।

3) भारत के संदर्भ में सहकारी संघवाद के महत्व को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : **भारत के संदर्भ में सहकारी संघवाद (Cooperative Federalism) का महत्व** निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है—

1. केंद्र–राज्य संबंधों में सहयोग

सहकारी संघवाद केंद्र और राज्यों के बीच टकराव के बजाय **सहयोग, संवाद और साझेदारी** को बढ़ावा देता है। इससे नीतियों के निर्माण और क्रियान्वयन में सामंजस्य बनता है।

2. संविधान की भावना का संरक्षण

भारतीय संविधान संघीय ढांचे पर आधारित है, किंतु उसमें एकात्मक तत्व भी हैं। सहकारी संघवाद **संघीय संतुलन** बनाए रखते हुए संविधान की मूल भावना को सुदृढ़ करता है।

3. विकास योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन

स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि, बुनियादी ढांचा जैसे क्षेत्रों में केंद्र और राज्यों के संयुक्त प्रयासों से योजनाओं का **बेहतर और समान क्रियान्वयन** संभव होता है।
उदाहरण: आयुष्मान भारत, स्वच्छ भारत मिशन।

4. विविधता में एकता का सशक्तीकरण

भारत की भाषाई, सांस्कृतिक और क्षेत्रीय विविधता को ध्यान में रखते हुए सहकारी संघवाद राज्यों को **अपनी आवश्यकताओं के अनुसार नीतियाँ लागू करने की स्वतंत्रता** देता है।

5. नीति निर्माण में राज्यों की भागीदारी

NITI आयोग जैसे मंचों के माध्यम से राज्यों को नीति निर्माण में सक्रिय भूमिका मिलती है, जिससे **लोकतांत्रिक सहभागिता** बढ़ती है।

6. वित्तीय संतुलन और संसाधन वितरण

GST परिषद जैसे संस्थागत ढांचे केंद्र और राज्यों के बीच **वित्तीय सहयोग और सहमति आधारित निर्णय** को प्रोत्साहित करते हैं।

7. राष्ट्रीय एकता और अखंडता की मजबूती

सहकारी संघवाद से केंद्र–राज्य विश्वास बढ़ता है, जो **क्षेत्रीय असंतोष और अलगाववादी प्रवृत्तियों** को कम करने में सहायक होता है।

निष्कर्ष

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में सहकारी संघवाद **सुशासन, समावेशी विकास और राष्ट्रीय एकता** के लिए अनिवार्य है। यह केंद्र और राज्यों को प्रतिस्पर्धा नहीं, बल्कि साझेदारी के माध्यम से आगे बढ़ने का मार्ग दिखाता है।

4) भारतीय राज्यों की चुनावी राजनीति में जाति की भूमिका समझाइए ।

उत्तर : **भारतीय राज्यों की चुनावी राजनीति में जाति की भूमिका** को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है—

1. सामाजिक संरचना और राजनीतिक व्यवहार

भारत में जाति केवल सामाजिक पहचान नहीं, बल्कि एक **राजनीतिक संसाधन** भी है। मतदाता प्रायः अपनी जातीय पहचान के आधार पर राजनीतिक दलों और उम्मीदवारों का समर्थन करते हैं।

2. राजनीतिक दलों की रणनीति

राजनीतिक दल टिकट वितरण, गठबंधन और चुनावी प्रचार में **जातीय समीकरणों** को ध्यान में रखते हैं। उदाहरण:

- उत्तर प्रदेश में यादव, दलित और ब्राह्मण राजनीति
- बिहार में यादव, कुर्मी और दलित वोट बैंक

3. जाति आधारित दलों का उदय

कई राज्यों में जाति-विशेष के हितों का प्रतिनिधित्व करने वाले दल उभरे हैं, जैसे—

- बहुजन समाज पार्टी (दलित राजनीति)
- राष्ट्रीय जनता दल (यादव-ओबीसी राजनीति)
  इससे जाति राजनीति का **संस्थागत रूप** विकसित हुआ।

4. आरक्षण और सामाजिक न्याय की राजनीति

आरक्षण नीति चुनावी विमर्श का प्रमुख मुद्दा रही है। इससे **पिछड़े वर्गों और दलितों का राजनीतिक सशक्तिकरण** हुआ, किंतु साथ ही सामाजिक ध्रुवीकरण भी बढ़ा।

5. नेतृत्व और प्रतिनिधित्व

जाति ने राजनीतिक नेतृत्व के उभार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अनेक राज्यों में सत्ता में आने वाले नेता **प्रभावशाली या संख्यात्मक रूप से मजबूत जातियों** से रहे हैं।

6. मतदान व्यवहार और ध्रुवीकरण

चुनावों में जाति आधारित अपीलें अक्सर **ब्लॉक वोटिंग** को बढ़ावा देती हैं, जिससे मुद्दा आधारित राजनीति कमजोर पड़ती है।

7. बदलती प्रवृत्तियाँ

शहरीकरण, शिक्षा, मीडिया और आर्थिक मुद्दों के प्रभाव से कुछ हद तक जाति की भूमिका कम हुई है, किंतु ग्रामीण क्षेत्रों और राज्य स्तरीय राजनीति में यह अभी भी **प्रभावशाली कारक** बनी हुई है।

निष्कर्ष

भारतीय राज्यों की चुनावी राजनीति में जाति एक **महत्त्वपूर्ण लेकिन दोधारी तलवार** है। यह एक ओर वंचित वर्गों को प्रतिनिधित्व और आवाज देती है, तो दूसरी ओर सामाजिक विभाजन और संकीर्ण राजनीति को भी बढ़ावा देती है। लोकतंत्र की गुणवत्ता के लिए आवश्यक है कि जाति से ऊपर उठकर **विकास, सुशासन और समावेशी नीतियों** को प्राथमिकता दी जाए।

5) राज्यों में राष्ट्रपति शासन लागू होने के प्रमुख परिणामों को समझाइए।

उत्तर :

1. राज्य सरकार का निलंबन या बर्खास्तगी

राष्ट्रपति शासन लगने पर निर्वाचित राज्य सरकार को **बर्खास्त या निलंबित** कर दिया जाता है और मुख्यमंत्री तथा मंत्रिपरिषद का कार्यकाल समाप्त हो जाता है।

2. राज्यपाल की भूमिका में वृद्धि

राज्य की कार्यपालिका शक्तियाँ **राष्ट्रपति के नाम पर राज्यपाल** द्वारा प्रयोग की जाती हैं। वास्तविक शासन राज्यपाल के माध्यम से केंद्र सरकार के नियंत्रण में चला जाता है।

3. विधानसभा की स्थिति

राज्य विधानसभा को

- या तो **निलंबित (suspended animation)** रखा जाता है
- या **भंग (dissolved)** कर दिया जाता है
  जिससे विधायी प्रक्रिया बाधित होती है।

4. केंद्र–राज्य संबंधों पर प्रभाव

राष्ट्रपति शासन से **संघीय ढांचे पर आघात** पड़ता है और राज्यों की स्वायत्तता सीमित हो जाती है। बार-बार प्रयोग से केंद्र की प्रभुत्ववादी प्रवृत्ति उजागर होती है।

5. लोकतांत्रिक प्रक्रिया का अवरोध

चूँकि निर्वाचित सरकार हट जाती है, इसलिए जनता का जनादेश **अस्थायी रूप से निष्प्रभावी** हो जाता है, जिससे लोकतंत्र की भावना कमजोर पड़ती है।

6. प्रशासनिक स्थिरता या नियंत्रण

कुछ मामलों में राष्ट्रपति शासन से

- राजनीतिक अस्थिरता पर नियंत्रण
- कानून-व्यवस्था की बहाली
- संवैधानिक संकट का समाधान
  संभव हुआ है, विशेषकर जब कोई सरकार बहुमत सिद्ध करने में विफल रही हो।

7. न्यायिक समीक्षा की भूमिका

एस.आर. बोम्मई बनाम भारत संघ (1994) के बाद राष्ट्रपति शासन **न्यायिक समीक्षा के अधीन** है, जिससे इसके दुरुपयोग पर अंकुश लगा है।

8. चुनाव और नई सरकार का गठन

राष्ट्रपति शासन की अवधि में या उसके बाद **नए चुनाव** कराए जाते हैं, जिससे अंततः लोकतांत्रिक शासन की पुनर्स्थापना होती है।

निष्कर्ष

राष्ट्रपति शासन एक **असाधारण संवैधानिक उपाय** है, जिसका प्रयोग केवल अंतिम विकल्प के रूप में होना चाहिए। यद्यपि यह संवैधानिक व्यवस्था की रक्षा के लिए आवश्यक हो सकता है, लेकिन इसके अत्यधिक या राजनीतिक उपयोग से संघीय व्यवस्था और लोकतंत्र दोनों कमजोर हो सकते हैं।

सत्रीय कार्य-III

निम्न लघु श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंकों का है।

6) विकास राजनीति को उदाहरण सहित परिभाषित कीजिए।

उत्तर : विकास राजनीति (Development Politics) वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कोई राजनीतिक व्यवस्था सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी परिवर्तनों के अनुरूप खुद को ढालती है और अधिक कुशल, जवाबदेह और सहभागी बनती है। यह सरकारी संरचनाओं, शासन प्रणाली और नागरिकों की सहभागिता में सकारात्मक विकास को संदर्भित करता है, जो आधुनिकता की ओर ले जाता है।

विकास राजनीति की परिभाषा:

- **लूशन पाई के अनुसार:** राजनीतिक विकास का मतलब समानता, क्षमता और विभेदीकरण (संरचनात्मक विशेषज्ञता) में वृद्धि से है।
- **सरल शब्दों में:** यह समय के साथ शासन करने की क्षमता, नीति कार्यान्वयन में दक्षता और आम नागरिकों की निर्णय प्रक्रिया में भागीदारी में वृद्धि है।

विकास राजनीति के उदाहरण:

1. **तकनीकी और समावेशी शासन (डिजिटल इंडिया):** भारत सरकार द्वारा 'डिजिटल इंडिया' या 'आधार' (Aadhaar) के माध्यम से सरकारी सेवाओं को सीधे नागरिकों के बैंक खातों तक (DBT) पहुँचाना। यह प्रशासनिक क्षमता को बढ़ाता है और भ्रष्टाचार को कम करता है।
2. **भागीदारी में वृद्धि (महिला सशक्तिकरण):** पंचायतों और विधायिका में महिलाओं के लिए आरक्षण (33%)। यह राजनीतिक संस्थाओं में संरचनात्मक बदलाव लाता है और लोकतांत्रिक भागीदारी को अधिक समावेशी बनाता है।

7) दल प्रणाली के रूपांतरण से आप क्या समझते हैं?

उत्तर : दल प्रणाली का रूपांतरण (Transformation of Party System) एक ऐसी गतिशील प्रक्रिया है, जिसमें किसी देश की दलीय संरचना - जैसे एकदलीय, द्विदलीय या बहुदलीय व्यवस्था - में क्रमिक या

अचानक परिवर्तन आता है। भारत के संदर्भ में, यह 1989 के बाद 'कांग्रेस प्रणाली' के पतन, क्षेत्रीय दलों के उदय और गठबंधन राजनीति (Coalition politics) की शुरुआत से जुड़ी है।

दल प्रणाली के रूपांतरण के प्रमुख पहलू:

- **कांग्रेस प्रणाली का पतन और बहुदलीय व्यवस्था:** स्वतंत्रता के बाद कांग्रेस के प्रभुत्व (One-party dominance) से भारतीय दल प्रणाली धीरे-धीरे एक बहुदलीय (Multiparty) प्रणाली में बदल गई।
- **गठबंधन की राजनीति (Alliance Politics):** किसी एक दल को स्पष्ट बहुमत न मिलने के कारण 1996 के बाद गठबंधन सरकारें एक सामान्य राजनीतिक वास्तविकता बन गई हैं, जैसे NDA या UPA।
- **क्षेत्रीय दलों की भूमिका:** राष्ट्रीय परिदृश्य पर क्षेत्रीय और छोटे दलों का प्रभाव बढ़ा है।
- **गठबंधन का स्वरूप:** गैर-सिद्धांतिक गठबंधन, जैसे की शिवसेना के साथ भाजपा या अन्य क्षेत्रीय दलों के साथ कांग्रेस/भाजपा का गठबंधन, रूपांतरण का हिस्सा है।
- **अवसरवाद का उदय:** सत्ता हासिल करने के लिए दलों द्वारा विचारधारा को छोड़कर गठबंधन करने की प्रवृत्ति बढ़ी है।

8) सरकारिया आयोग की दो प्रमुख सिफारिशें बताइए।

उत्तर : सरकारिया आयोग (1983) की दो प्रमुख सिफारिशें केंद्र-राज्य संबंधों को सुधारने पर केंद्रित थीं:

1. **अंतर-राज्यीय परिषद की स्थापना:** संविधान के अनुच्छेद 263 के तहत एक स्थायी अंतर-राज्यीय परिषद (Inter-State Council) की स्थापना की जानी चाहिए ताकि राज्यों के बीच विवादों और केंद्र-राज्य मुद्दों का समाधान हो सके।
2. **अनुच्छेद 356 का सीमित उपयोग:** राष्ट्रपति शासन (अनुच्छेद 356) का प्रयोग केवल अंतिम उपाय के रूप में, अत्यंत गंभीर परिस्थितियों (जैसे संवैधानिक विफलता) में ही किया जाना चाहिए, न कि राजनीतिक उद्देश्यों के लिए।

इसके अलावा, राज्यपाल की नियुक्ति में मुख्यमंत्री से परामर्श करने और उन्हें सक्रिय राजनीति से बाहर का व्यक्ति होने की सिफारिश भी प्रमुख थी।

9) विषम संघवाद की अवधारणा को उदाहरण सहित समझाइए ।

उत्तर : विषम या असममित संघवाद (Asymmetric Federalism) एक ऐसी संघीय व्यवस्था है जहाँ सभी राज्यों को समान शक्तियाँ प्राप्त नहीं होतीं। इसमें ऐतिहासिक, सांस्कृतिक या भौगोलिक कारणों से कुछ राज्यों को अन्य राज्यों की तुलना में अधिक स्वायत्तता (Special Powers) दी जाती है। यह विविधता को समायोजित करने का एक व्यावहारिक तरीका है, न कि समानता का उल्लंघन।

उदाहरण (भारतीय संदर्भ में):

- **अनुच्छेद 371:** पूर्वोत्तर राज्यों (नागालैंड, मिजोरम आदि) को उनकी विशिष्ट संस्कृति और प्रथागत कानूनों की रक्षा के लिए विशेष प्रावधान दिए गए हैं। उदाहरण के लिए, नागालैंड (अनुच्छेद 371A) में

भूमि या सामाजिक प्रथाओं से संबंधित कानून राज्य विधानसभा की सहमति के बिना लागू नहीं हो सकते।

- **पूर्ववर्ती अनुच्छेद 370:** जम्मू-कश्मीर को भारतीय संविधान के तहत विशेष दर्जा प्राप्त था, जिसके तहत राज्य का अपना संविधान था।
- **वित्तीय विषमता:** कुछ राज्यों को 'विशेष श्रेणी का दर्जा' (Special Category Status) देकर केंद्रीय करों में अधिक हिस्सेदारी या अतिरिक्त सहायता दी जाती है, जो विषम संघवाद का ही एक रूप है।

विषम संघवाद की आवश्यकता:

यह विविधतापूर्ण देशों में क्षेत्रीय आकांक्षाओं को संतुष्ट करने, अल्पसंख्यक हितों की रक्षा करने और राष्ट्र की एकता बनाए रखने के लिए अनिवार्य है।

10) भारतीय राजनीति के संदर्भ में LGBTQ+ समुदाय कौन हैं?

उत्तर : भारतीय राजनीति के संदर्भ में, LGBTQ+ समुदाय लेस्बियन, गे, बाइसेक्शुअल, ट्रांसजेंडर, क्वीर, इंटरसेक्स और एसेक्सुअल व्यक्तियों का एक ऐसा समूह है, जो अपनी यौन अभिविन्यास और लैंगिक पहचान के कारण सामाजिक, कानूनी और राजनीतिक समानता व अधिकारों (जैसे विवाह समानता) के लिए संघर्ष कर रहा है। 2018 में धारा 377 को अपराध-मुक्त करने के बाद, यह समुदाय अब मुख्यधारा की राजनीति में पहचान और नागरिक अधिकारों की मांग कर रहा है।

भारतीय राजनीति में LGBTQ+ समुदाय के प्रमुख पहलू:

- **परिभाषा (LGBTQIA+):** यह लेस्बियन, गे, बाइसेक्शुअल, ट्रांसजेंडर, क्वीर, इंटरसेक्स और एसेक्सुअल को संदर्भित करता है। भारत में इसमें 'हिजड़ा' (थर्ड जेंडर) समुदाय भी शामिल है।
- **कानूनी स्थिति और अधिकार:**
  - **धारा 377 (2018):** सर्वोच्च न्यायालय ने समलैंगिक संबंधों को गैर-अपराधिक घोषित किया, जो एक बड़ी कानूनी जीत थी।
  - **ट्रांसजेंडर अधिकार:** ट्रांसजेंडर व्यक्ति (अधिकारों का संरक्षण) अधिनियम, 2019, उन्हें अपना लिंग बदलने का अधिकार देता है।
  - **विवाह अधिकार (2023):** सर्वोच्च न्यायालय ने समान-लिंग विवाह को कानूनी मान्यता देने से इनकार कर दिया और कहा कि यह कानून बनाने का काम संसद का है।

IGNOU IQ Hindi

ZOOM CLASS

All courses are available

PACKAGE DETAILS

- Free Study Materials
- Practice sets (HardCopy)
- Revision before Exams
- Monday to Friday Classes

JOIN NOW

CONTACT US
6205717642/8521027286

www.ignouiqhindi.Com

GUESS PAPER

5 Years Previous Questions Answers

GUESS PAPER

BPSC - 103

Disclaimer for this Guess Paper/Notes/Sample Papers By IGNOU IQ HINDI (IIH)

This PDF contains previous year questions asked by IGNOU. This PDF has been created to help you in the exam. However, It is important to note the following :

A. No Guarantee of Examination Questions: We do not guarantee that the questions presented in this sample paper will appear in your actual exams. The content is for practice purposes only.

B. Book Study Recommended: To achieve good marks in your IGNOU exams, it is highly recommended that you thoroughly study the prescribed course materials and textbooks. Relying solely on this sample paper may not be sufficient for exam success.

C. Use as a Study Materials : Use this sample paper as a supplementary study aid to test your knowledge and exam preparedness.

D. Self-Responsibility: Your performance in exams is your responsibility, and success depends on your dedication to studying the course material.

हमारे यहाँ IGNOU के सभी COURSES के Study Materials जैसे ; Guess Paper/Book Notes/ Practice Sets बहुत ही सरल भाषा में उपलब्ध है.

Our Website
Www.ignouiqhindi.Com

Phone Number
6205717642/8521027286